भजन

तर्ज :– तू प्यार का सागर है

तुम मेहर के सागर हो, तुमारी मेहर में रहते हम
इन आपके चरणों का, सहारा ले कर जीते हम

1. हम तो भूले थे माया में, अपना मूल वतन
अपने घर की याद दिलाने, लाये तुम ये वचन
इन आपके वचनों से, हमारी जाग गई आतम, तुम मेहर.....

2. पल–पल बढ़ती इस मेहर को, कैसे गायें पिया
श्री निजनाम के उजियारे से, धाम दिखला दिया
अब मूल–मिलावे को, देख लेगें चितवन से हम, तुम मेहर.....

3. प्राणनाथ तुम, प्राण पिया हो, प्राण जीवन तुमीं
आतम के आधार हमारे, अशैं–दिल में तुमीं
जिस हाल में राखोगे, निभा लेगें उस हाल में हम तुम मेहर.....